SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

xkèkh th d vkfFkd fopkjk dk fo'y"k.kkRed vè;;u

t;çdk'k [kj] (Ph.D.), राजनीतिक विज्ञान विभाग,
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
t;çdk'k [kj] (Ph.D.), राजनीतिक विज्ञान विभाग,
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

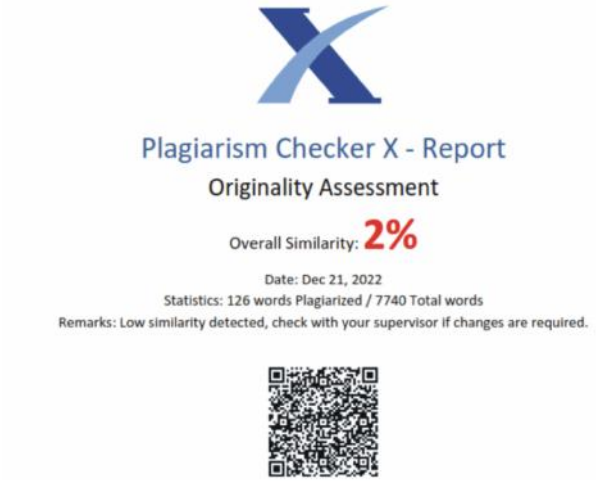

Received on : 21/12/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/12/2022
Plagiarism : 02% on 21/12/2022

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **2%**
Date: Dec 21, 2022
Statistics: 126 words Plagiarized / 7740 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

'kks/k lkj

प्रस्तुत अध्ययन गांधी जी के आर्थिक विचारो का भारतीय परिपरेक्ष्य में अध्ययन है। चूंकि वे पश्चिमी सभ्यता और मशीनीकरण के खिलाफ थे इसलिए उन्होंने आर्थिक विकास का स्वदेशी मॉडल लोगों के सामने रखा था। आजादी के बाद से ही उनके आर्थिक विचारो को दरकिनार कर दिया गया और हम पश्चिमी प्रभाव में डूबे रहे, पर इस अध्ययन के माध्यम से पता चलता है कि आर्थिक विकास का स्वदेशी स्वरूप ही हमारे लिए उपयुक्त है।

e[; 'kCn

Hkkjrh;rk] Lon'kh] vkfFkd] vFko;oLFkk] fodkl·

आधुनिक उद्योग प्रधान सभ्यता ने पूंजीवाद के विकास में महान योगदान दिया है। पूंजीवाद शब्द आजकल उस आर्थिक व्यव्स्था के लिए काम में लाया जाता है जो औद्योगिक क्रांति के बाद पैदा हुई। वर्तमान यूरोप के तुलना में योगदान देने में सक्षम थे। भारत में अंग्रेजी राज्य कायम होने से पहले इंग्लैण्ड और भारत की आर्थिक अवस्थाओं में बुनियादी अंतर यह था कि इंग्लैण्ड किसी तरह भी भारतीय समान को छोड़ नहीं सकता था और औद्योगिक देश के रूप में भारत इंग्लैण्ड से बढ़कर था। इंग्लैण्ड पहला राज्य था, जिसने अपनी अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से औद्योगिक क्रांति मे सफलता पाई। औद्योगिक क्रांति ने एक नई सभ्यता के जन्म दिया औजार और मशीन ने पशु जगत से उपर उठा दिया। यह उपलब्धि ऐतिहासिक थी साथ ही इस सभ्यता ने उपभोक्तावाद, भौतिकवाद तथा आधुनिक सभ्यता की बुनियाद रखी। इस सभ्यता का प्रभाव अर्थव्यवस्था और औद्योगिककरण तक सीमित नही रहा, इसका प्रभाव राजनीति के आधुनिकिकरण में, विश्वास के स्थान पर विवेक संगत तरीके से मानवों में सोचनें एवं व्यवहार करने के तरीके

विकसित करने में, लोगों के वैज्ञानिक सोच और समझ बढ़ानें में, विज्ञान आधारित आधुनिक शिक्षा के माध्यम से ज्ञान की प्रस्थापना में, कुल मिलकर सभ्य जीवन शैली के प्रत्येक पहलू पर इस औद्योगिक सभ्यता एवं का प्रभाव पड़ा। इस सभ्यता ने स्वतंत्रता, समानता, विधि का शासन पाश्चात्य शैली का उदार लोकतंत्र से दुनिया को परिचित कराया।

आधुनिक प्रकृति का साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद जिसे लेनिन ने पूंजी के निर्यात से उत्पन्न साम्राज्यवाद की सज्ञा दी है, इसी सभ्यता की देन है। उद्योग प्रधान सभ्यता ने कृषि प्रधान एवं मानव श्रम से उत्पादित अर्थव्यवस्था वाले राज्यों, विशेषकर भारत की गैर पूंजीवादी विकसित अर्थव्यवस्था को अत्यधिक क्षति पहुँचायी। भारत और चीन जैसे राष्ट्र प्राचीन युग से ही अपने राज्यों में विकसित सभ्यताओं के माध्यम से सभ्य जीवन जीने के अभ्यस्त रहे हैं। वर्क ने लिखा है भारतवर्ष शताब्दियों से सभ्य तथा संस्कृत है। जब अंग्रेज जंगलों में रहा करते थे, तब भारतवर्ष में सभ्यता और संस्कृति थी। भारतीयों के लिए उसने कहा कि वे ऐसे जन है जो शताब्दियों से सभ्य और संस्कृत है। संतुलित जीवन के सभी कलाओं में वे दक्ष है और उस समय से दक्ष है जब हम जंगलों में थे।

प्रश्न यह है कि भारत जैसा महान राज्य उपनिवेशवाद के जंगुल में कैसे फँस गया, इसका उत्तर यह है कि जुड़ने और बिखरने की प्रवृत्ति इस देश की नियति रही है। केंन्द्रीय सत्ता के कमजोर होते ही इसका अखिल भारतीय स्वरूप छीन होता रहा है, परिणाम स्वरूप विदेशी आक्रमणकारियों ने इस देश पर अपनी हुकुमतें कायम की है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद विदेशी हुकुमतों की अंतिम कड़ी साबित हुई। स्वतंत्र भारत पर ब्रिटिश उपनिवेशवाद का जितना गहरा प्रभाव पड़ा है उतना अन्य विदेशी हुकुमतों जैसे तुर्क, अफगानों और मुगलो का नहीं पड़ा है। उपनिवेशवाद का मकसद ही था कि भारत को आर्थिक दृष्टि से खोखला बना दिया जाय। इसकी कला और सिल्क स्वदेशी उत्पादों को बर्बाद कर ही अंग्रेज अपना अतिरिक्त उत्पाद जो मशीनों द्वारा निर्मित, सुन्दर और सस्ते थे, भारतीय बाजार में बेच सकते थे। अंग्रेज और अन्य विदेशी व्यापारी, जो भारत में तिजारत की तलाश में आते थे, यहाँ पर विदेशी माल बेचने के लिए नहीं, बल्कि यहाँ की बनी हुई बढिया और नफीस वस्तुऐं खरीदकर यूरोप मे खूब मुनाफे पर बेचने के लिए ले जाने को आते थे। ब्रिटिश उपनिवेशवाद की इस व्यापारिक नीति से भारत कभी उबर नहीं पाया। भारत के घरेलू उद्योगों में बना माल, उन्नतशील मशीन के उपयोग से बने माल से किसी भी हालत में ज्यादा दिन मुकाबला नही कर सकता था। भारत की सभ्यता और संस्कृति पर उद्योग प्रधान सभ्यता की गहरी छाप नजर आती है। महात्मा गाँधी ने उद्योग प्रधान सभ्यता को अनैतिक बताया है। गाँधी ने हिन्द स्वराज में मशीन तंत्र पर प्रहार करते हुए इसे आधुनिक सभ्यता का मुख्य प्रतीक माना तथा इसे एक महान पाप के रूप में चित्रित किया है। विनाश होने तक प्रत्येक सभ्यता अपनी खूबियों और कमजोरियों के साथ निरंतर प्रगति करती रहती है। अतः उद्योग प्रधान युरोप की सभ्यता ने आर्थिक विकास एवं औद्योगिकरण के क्षेत्र में जो भी उपलब्धियाँ हासिल की है उससे जुड़ी विकृतियों में मानवता के समक्ष अस्तित्व रक्षा का प्रश्न भी खड़ा कर दिया है। पर्यावरण संकट, समाज में बढ़ती हिंसा का रूझान भौतिक संसाधनों पर नियंत्रण हेतु विकसित राज्यों का विकासशील राज्यों पर निरंतर बढ़ता दबाव, समृद्ध वर्गो में अति उपभोग की प्रवृति, सापेक्ष गरीबी का बढ़ता आकार तथा राष्ट्रीय सम्पति को खुली और प्रतियोगिता पूर्ण बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के नाम पर निजी कंपनियों को सौंपना ऐसे लक्षण है, जिससे निपटना समस्त मानवता के लिए असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

महात्मा गाँधी ने प्रकृति के साथ तादात्म स्थापित कर मानव को जिस जीवन शैली अपनाने की वकालत की थी, वह मार्ग भौतिक समृद्धि को आर्थिक प्रगति का लक्ष्य र्निधारित करने वाली नीति नहीं है। यह निर्विवाद रूप से अकाट्य है कि उद्योग प्रधान सभ्यता ने विकास की जिस आंधी दौड़ की शुरूआत की उसका कुप्रभाव सबसे अधिक उस निर्धन वर्ग को झेलना पड़ रहा है, जिस वर्ग ने विकासनुमा सीढ़ी के प्रथम पादान पर अपने कदम भी नहीं रखा है। उद्योग प्रधान सभ्यता का आधार सामाजिक डार्विनवाद है, जो इस बुनियादी सिधान्त पर आधारित है कि योग्यतम व्यक्ति ही जीवित रहने की पात्रता रखता है। राज्य अथवा समाज का यह दायित्व नहीं है कि प्रत्येक प्रकार की वंचना के शिकार व्यक्तियों अथवा समुदायों की सहायता करें। उन्हें प्रकृति के रहमोकरम पर छोड़ दिया जाय वे जी सकते हैं तो जीये अथवा जीवन की आहुती दे दे। यह दर्शन सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के भारतीय मूल्य से इत्तफाक

नहीं रखता जो भारत के ऋषियों एवं मुनिषियों के चिंतन का सार तत्व रहा है। ऋषि–मुनियों की इस वाणी में पर्याप्त सत्यता है कि भोगों की प्रवृति में लगाम से ही श्रेष्ठ व संतुलित जीवन का मार्ग खुल सकता है। महात्मा गाँधी को इसी परम्परा में समझने की जरूरत है।

1909 में हिन्द स्वराज्य नामक पुस्तक में औद्योगिकीकरण से उपजी अमानवीय सभ्यता को अपने चिंतन का केन्द्र बिन्दु बनाया और लोगों को जीने का उद्देश्य और प्रकृति का रहस्य समझाया। कुदरत ने व्यक्ति को प्राकृतिक गुणों एवं क्षमता से नवाजा है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए श्रम करने हेतु दो हाथ प्रदान किया है, दो पाँव प्रदान कर चलने और सीमित दूरी तक गति करने की क्षमता प्रदान की है। व्यक्ति के श्रम करने की क्षमता सीमित है। अपने पैरों पर चलकर प्रकृति द्वारा प्रदत संसाधनों का दोहन कर अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को स्थानीय स्तर पर ही प्राप्त कर सके यही प्रकृति का मनुष्यों के लिए संदेश है। कुदरत के नियम के अनुरूप सभी जीवों में श्रेष्ठ मानव ही है। उसके आचरण से सभी जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है यह प्रमाणित नहीं होता। अति भोग्यवादी प्रकृति ने मनुष्य को निराभौतिकवादी बना दिया है, मानो प्रकृति में उसका कोई रिश्ता ही नहीं है। प्रकृति ने सभी जीवों में श्रेष्ठ मानव जाती की रचना कर ऐसा प्रतीत होता है, अपने विनाश हेतु बीज बो दिया। चूँकि उद्योग प्रधान सभ्यता के प्रति मनुष्य का आकर्षण उसे पशुवत व्यवहार करने हेतु विवश कर दिया है, वह अत्यंत असंतुष्ट प्राणी बन गया है। कारलाइल ने इसे ''शूकर नीति'' का नाम दिया है। नवीनतम प्रकृति ने सभी जीवों एवं वनस्पितियों के अस्तित्व के लिए जिस जीवन चक्र का निर्माण किया था उसे मनुष्य के भौतिकवादी उपभोक्तावादी प्रवृति ने असंतुलित कर दिया है। मनुष्यों में अनुकरण करने की प्रवृति अद्भूत है। जिस उद्योग प्रधान सभ्यता की आर्थिक एवं व्यापारिक नीति ने भारत को गुलाम बनाया। स्वतंत्र भारत के नीति निर्माताओं ने उसी उद्योग प्रधान सभ्यता के मूल्यों को कुछ संशोधन के साथ अपनाते हुए देश के आर्थिक विकास हेतु राज्य के नेतृत्व में योजनाबद्ध तरीके से औद्योगिकरण करने की नीति अपनाई। गाँधीवादी अर्थव्यवस्था विशेषकर श्रम प्रधान न्यूनतम मशीन के उपयोग से संचालित कुटीर उद्योग की नीति को देश के लिए अनुपयुक्त बताया।

मिश्रित अर्थव्यवस्था वाली नेहरू महालेनविश प्रतिमान ने भारत को दुनिया के प्रमुख औद्यौगिक राज्यों की पंक्ति में अवश्य शमिल करा दिया। औद्योगिक क्रांति से पूर्व भारत की अर्थवयवस्था इसकी शिल्प और कला तथा शिल्पकारों का हुनर जिस स्तर पर था, आज का भारत अब तक बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में, दस उद्योग प्रधान राज्यों में, परमाणु शक्ति से, संपन्न राज्यों में विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्र में, इसकी उपलब्धि प्रशंसनीय है। भारतीय अर्थशास्त्री रमेश चन्द्र दत्त ने लिखा है– '' अठारहवी सदी में भारत एक बड़ा उद्योग प्रधान और साथ ही बड़ा कृषि प्रधान देश था और भारतीय करघों का माल एशिया और यूरोप की मंडियों में बिकता था।'' प्राचीन काल में विदेशी मंडियों पर भारत का कब्जा था। देश के कारीगर अपने हाथ के हुनर को भूले नहीं थे।

गाँधी जी ने प्राचीन ग्राम प्रधान भारतीय अर्थव्यवस्था को स्वतंत्र भारत के लिए उपयुक्त बताया। 1909 में उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तक हिन्द स्वराज में उद्योग प्रधान सभ्यता की आलोचना की गयी है, उसका आशय यही है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर मनुष्य अपने श्रम से बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करे। बड़ी मशीनें, रेलवे, डाक्टर, अथवा वकील की भारत को आवश्यकता नहीं है। चूँकि ये विचार हिन्द स्वराज में गाँधी जी ने व्यक्त किया था, उनके सभी विचारों को स्वीकारना आवश्यक नहीं है। भारी मशीनें, रेलवे, डाक्टर तथा वकील आधुनिक जीवन शैली का अभिन्न अंग है इसलिए गाँधी जी के ये विचार उद्योग प्रधान सभ्यता की विकृति है, अमान्य है। इस दृष्टि से पंडित जवाहर लाल नेहरू की आर्थिक एवं औघौगिक नीति सही प्रतीत होती है। 90 के दशक में नवउदारवाद की नीति भी समय और परिस्थिति के अनुरूप अपनाई गई, उचित है। नेहरू जी की नीति ने आधुनिक भारत की बुनियाद रखी। देश दुनिया के औद्योगिक नक्शे पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा सका। 90 के दशक में अपनाई गई बाजार आधारित खुली अर्थव्यवस्था की नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश एवं व्यापार के लिए खोल दिया, भारत उन चन्द खुश नसीब देशों में शामिल है, जहाँ विदेशी निवेशक भारत के उदार निवेश नीति का लाभ उठाकर बड़ें पैमाने पर निवेश कर रहे हैं। उदार व्यापार की नीति का लाभ उठाते हुए बहुराष्ट्रीय निगमों ने अपनी महंगी से महंगी लक्जेरियस कारें, अति कीमती इलेक्ट्रोनिक उत्पाद, कम्प्यूटर, मोबाईल, वाशिंग मशीन, हाई

फ्रिक्वेन्सी वाले म्यूजिक सिस्टम, भारतीय उपभोक्ताओं के लिए ऐशे आराम के वे सारे उपकरण मुहैया करा दिया है, जो उत्पाद 90 के नव–उदारवादी आर्थिक नीति को अपनाने के पूर्व भारत के मध्यम वर्ग के उपभोक्ताओं के पहुँच से बाहर थे। भारतीय समाज का नकारात्मक चेहरा पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया है। दरअसल भारतीय समाज की जैसी छवी उपनिवेशवादी शासकों ने शासन की औचित्यता को जायज ठहराने के लिए चित्रित किया था, भारतीय समाज का वैसा चेहरा अतीत में कभी था ही नही, भारत की सभ्यता और संस्कृति अत्यंत समृद्ध रही है। इसी समृद्ध संस्कृति ने भारत को विश्व गुरू के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसकी समृद्धि ने जंगली विदेशी लड़ाकुओं को मौर्य वंश तथा उसके पहले से भी भारत पर हमला करने हेतु प्रेरित किया। अरबों के सिंध विजय 712 ईसवी से भारत में कमजोर पड़ चुँकी केन्द्रीय शक्ति के कारण धीरे–धीरे इन विदेशी हमलावरों के अधीन होता चला गया, अंतिम विदेशी शक्ति जिसने भारत पर एक सौ नब्बे साल तक शासन किया वे अंग्रेज थे। दरअसल अंग्रेजों को भारत में मशीनों से बना अपना उत्पाद बेचने के लिए बड़े बाजार की जरूरत थी, व्यापार के उद्देश्य से आये अंग्रेज अन्तिम साँसे ले रही मुगल वंश के खंडहर पर अंततः अपना साम्राज्य कायम किया। भारत के शिल्प, कुटीर उद्योग तथा गुणवता वाले वस्त्र उद्योग समेत ऐसे उद्योगों को अत्याधिक क्षति पहुँचाई जिसकी पहचान अंग्रेजों के भारत में साम्राज्य कायम करने से पहले थी।

पश्चिम के देश जब प्रस्तर युग में थे और पत्थर से कुदाल बनाना अति मानवीय कार्य समझ जाता था, तब यह ध्यान देने की बात है कि पूरब विशाल और आश्चर्यजनक लौह स्तम्भ बना रहा था। जिससे उस समय की यांत्रिक और प्रौद्योगिकी के विकास का अनुमान होता है। पूरब में भारत भी शामिल है, इसलिए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत असभ्य थी, यह अंग्रेजों द्वारा औपनिवेशिक सता को वैधता प्रदान करने की सोची समझी चाल थी। रूडयार्ड किपलिंग ने अपने देशवासियो को सम्बोधित करते हुए कहाः

''श्वेतांग के भार को उठा लो,
अपनी सर्वश्रेष्ठ सन्तान भेजों,
अपने पुत्रों को भेजो निर्वासन में,
तुम्हारे बन्दियों को देखरेख करें,
हरदम हर तरह लैस तैयार रहे,
जंगली भेड़ों के इस रेवड़ का,
आधे राक्षस आधे बालक,
इन असभ्य प्रजाजनों को संभालें।

गाँधी जी औद्योगिक क्रांति से पूर्व भारत की समृद्ध अर्थव्यवस्था से पूर्ण रूप से परिचित थे। उनकी आर्थिक नीति में मानव श्रम पर जीवित रहने वाले शिल्पकारों, कारीगरों,छोटे–छोटे व्यापारियों तथा उत्पादन के विकेन्द्रीकृत कुटीर उद्योगो का विशेष महत्व है। मानव श्रम पर आधारित औद्योगिक नीति ने भारत को अत्याधिक समृद्ध बनाया। स्वतंत्र भारत भी मानव श्रम को महत्व देकर कुटीर उद्योगों के माध्यम से पुनः समृद्ध हो सकता हो सकता है, गाँधी जी की नीति ग्राम प्रधान, आत्म निर्भर भारत के निर्माण की थी। स्वाभाविक है उद्योग प्रधान सभ्यता के वे मूल्य जो मानव श्रम को मशीन से प्रतिस्थापित कर श्रमिकों को बेरोजगार बनाने की नीति रही है, गाँधी जी उसके विरोधी थे। उदारवाद के मूल्य जो राजनीतिक व्यवस्था को मानवीय चेहरा प्रदान करते थे, ऐसे मूल्यों से महात्मा गाँधी का कोई अर्न्तविरोध नहीं था। गाँधी की आधुनिक सभ्यता की आलोचना का रूख नकारात्मक या प्रतिशोधात्मक नहीं था। उन्होनें इसके ऐसे कई योगदान की प्रशंसा की है जिनका भारतीय सभ्यता में अभाव था उस पर समुचित ध्यान नही दिया गया था। इन योगदानों में कुछ प्रमुख थे– स्वतंत्रता, समानता, मानवाधिकार गरीबों की अर्थिक दशा में सुधार की संभावनाओं की तलाश, महिला अधिकारों की स्वीकारोशेक्त। दरअसल गाँधी जी की चिंता मनुष्य के अतिभोगवादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना था। आधुनिक अर्थव्यवस्था अति उपभोगवादी नीति को आर्थिक विकास का इंजन बाँधती है। अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की जितनी माँग बढ़ेगी, पूँजीपति उन वस्तुओं के उत्पादन हेतु अतिरिक्त कल करखाने

अधिक परिष्कृत तकनीक, अति आधुनिक मशीनें कुल मिलाकर अतिरिक्त मुनाफा अर्जित करने हेतु अधिक उर्जा स्वरूप करनी पड़ती है, अधिक जल की आवश्यकता पड़ती है जिससे जल संकट जैसी भीषण समस्या बढ़ता प्रदुषण, ग्रीन हाउस इफेक्ट कुल मिलाकर जलवायु का संकट उतरोत्तर विकराल रूख ले चुका है। इन सभी समस्याओं का निदान गाँधीवादी विकेन्द्रीकृत ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग की नीति अपनाने से हो सकता है।

गाँधीवादी अर्थव्यवस्था को पिछड़ेपन की निशानी मानना, मशीनों से उत्पादित वस्तुओं को आधुनिक अर्थव्यवस्था का प्रतीक मानना यही सोच उपभोक्तावादी का आधार है। स्वाभाविक है लोगो का रूझान आधुनिक मशीनों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की खपत जितनी अधिक होगी उस देश की अर्थव्यवस्था उच्च स्तर का विकास दर तेजी से हासिल करेगी। यही सोच इस देश के लिये उपयुक्त नहीं है। पूँजीवादी समाज बाजार आधारित अर्थव्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता देने लगा है। स्वाभाविक है, नवउदारवादी अर्थव्यवस्था को विकास का प्रतिमान मानकर विकासशील राज्य अपने देश में निवेश हेतु विदेशी पूँजी का स्वागत कर रहे हैं।

विदेशी पूँजी से विकाश को गति प्रदान कर सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की नीति उद्योग प्रधान सभ्यता की जड़े मजबूत करता जा रहा है। यह प्रवृत्ति विकाशसील राज्यों के हितों को क्षति पहुँचाकर विकसित राज्यों की समृद्धि को उतरोत्तर बढ़ता चला जा रहा है। विकासशील राज्यों के प्राकृतिक संसाधन विकसित राज्यों को दोहरा लाभ प्रदान कर रहे है। विकासशील राज्यों के घरेलू बाजार पर विकसित राज्यों के बहुराष्ट्रीय निगमों का नियंत्रण मजबूत हो गया है। विकासशील राज्यों के प्राकृतिक संसाधन से ही तैयार कर ऊँचे दर पर उपभोक्ताओं को बेचा जा रहा है। इन उत्पादों के समक्ष घरेलू उत्पाद प्रतियोगिता करने में असमर्थ है। स्वाभाविक है कि विकासशील राज्यों के स्वदेशी उत्पाद उसी देश के उपभोक्ताओं के नजर में घटिया है।

विकासशील राज्यों जिसमें भारत के शामिल है अपने देश में उपभोक्ताओं के लिए ऐसी वस्तुऐं बनाने में कठिनाई का अनुभव कर रहें हैं जिन वस्तुओं की माँग स्वदेशी बाजार में है पर उन वस्तुओं की आपूर्तिकर्ता तथा निर्माता विदेशी व्यापारी या बहुराष्ट्रीय निगम है। उद्योग प्रधान सभ्यता ने उपनिवेशवाद और सम्राज्यवाद की बुनियादी रखी थी, वही उपनिवेशवाद और सम्राज्यवाद वाशिंगटन सहमति से उपजी नवउदारवादी अर्थव्यवस्था के आड़ में पुनः जीवित हो गया है। उदार व्यापार की नीति अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोलना सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों का निजीकरण तथा घरेलू अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्थाओं जोड़ने की नीति विकासशील राज्यों के आत्म निर्भर बनने की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। गाँधीवादी अर्थव्यवस्था का मूलमंत्र सीमित संसाधन से परिष्कृत तकनीक के बगैर मशीनों के न्यूनतम प्रयोग से व्यक्तिगत श्रम से उत्पादन की छोटी–छोटी ईकाइयाँ स्थापित कर लोगों की जरूरतों को पूरा करने हेतू श्रम उन्मुखी अर्थव्यवस्था को विकसित करना है। जो नीति व्यक्ति, समाज और राज्य को आत्म निर्भरता की ओर ले जाय तथा विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। गाँधीजी हिन्द स्वराज के माध्यम से समझाना चाहते थे, जहाँ पर अंतिम व्यक्ति की आवाज का भी समान रूप से महत्व हो तथा वह भी विकास के सुफल का स्वाद ले सके।

गाँधीवादी अर्थव्यवस्था को अपनाने के प्रति भारतीय जन–मानस विशेषकर नीति निर्धारक और राजनेताओं की उदासीनता ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विशेषकर कृषि प्रधान ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अत्याधिक क्षति पहुंचाई है। भारत में जनसंख्या बिना कौम और फुलस्टॉप के निरन्तर बढ़ रही है, इतनी बड़ी आबादी को रोजगार उपलब्ध कराना विशेषकर गुणवतापूर्ण रोजगार किसी भी सरकार के लिऐ नामुमकिन है, विशेषकर नवउदारवादी अर्थव्यवस्था की नीति को अपनाकर रोजगार सजृत करने का प्रयत्न लगभग विफल है। नवउदारवादी नीति से भारतीय अर्थव्यवस्था को लगभग 3 ट्रिलीयन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था का आकार प्रदान कर दिया है। मौजूदा भारत की सरकार 2024 तक इसे 5 ट्रिलीयन डॉलर के आकार तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। नवउदारवादी नीति को अपनाने के पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 1 ट्रिलीयन डॉलर वाली भी नहीं थी। 2024 तक भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 5 ट्रिलीयन डालर हो सके तो दुनिया को पाँच बड़ी अर्थवयवस्था बन सकती है। भारत की अर्थव्यवस्था का आकार जिस अनुपात में बढ़ रहा है उस अनुपात में संगठित क्षेत्र में उच्च वेतन वाले रोजगार तेजी से सिकुड़ रहे हैं। नोटबंदी

(नवम्बर 2016) गुडस एण्ड सिर्विसेज टैक्स की क्रांतिक्रारी नीति ने 2012–13 से धीमी पड़ चुकी भारतीय अर्थव्यवस्था की गति को और भी धीमी कर दिया है। कोविड 19 ने भारतीय अर्थव्यवस्था को निगेटिव ग्रोथ जोन में पहुँचा दिया है। उम्मीद की एक किरण अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक तथा भारतीय रिर्जव बैंक के अनुमान से बँधी है, कि भारत का विकास दर 12 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। अब तक 1 वर्ष में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में यू.पी.ऐ. सरकार के कार्यकाल में 10 प्रतिशत की ऊँचाई को छूआ है। कोविड–19 के कारण शून्य (0) प्रतिशत से भी नीचे गिर गयी अर्थव्यवस्था, अगर एक वर्ष के भीतर 12 प्रतिशत से अधिक वृद्धि दर्शाती है तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। असल चिंता भारतीयों को विशेषकर सामान्य डिग्रीधारी युवाओं के लिऐ संगठित क्षेत्रों में रोजगार सृजित करने तथा अकुशल, अर्धकुशल कम पढ़े लिखे युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने को लेकर है।

इस चुनौती से उबरने का हल एक मात्र गाँधीवादी अर्थव्यवस्था ही है। उद्योग प्रधान अर्थव्यवस्था की तुलना में कई गुना अधिक धन पैदा करने में सक्षम है। गाँधीवादी अर्थव्यवस्था की तुलना में अधिकतम लोगों के लिऐ उद्योग प्रधान अर्थतंत्र रोजगार सृजित नहीं कर सकता। उद्योग प्रधान सभ्यता व्यक्ति को आत्म केन्द्रीत, अधिक स्वार्थी तथा उनके बीच संभ्रात वर्ग जैसी संस्कृति के अनुरूप जीवन जीने हेतु प्रेरित करती है। स्वाभाविक है गाँधीवादी अर्थव्यवस्था के प्रति सुख सुविधा भोग विलास के अनुरूप जीवन जीने वाले व्यक्तियों में आकर्षण नहीं के बराबर है। सादा जीवन, उच्च विचार कर दर्शन के प्रति आकर्षित लोग शांत स्वभाव वाले अथवा वैसे लोग जो धन की तुलना में उन मूल्यों के प्रति आस्थावान होते हैं जिसका सम्बन्ध किसी न किसी आदर्श से होता है। आदर्श जीवन अपनाना यू भी आसान नही है।

उद्योग प्रधान सभ्यता ने भौतिक सुख–सुविधा जुटाने के क्रम में पृथ्वी पर जीने योग्य परिस्थिति को कितनी क्षति पहुँचा दी है कि यह धरती पुनः लोगों के जीवन जीने योग्य दशा सृजित कर सके, इसकी आशा निरन्तर क्षीण होती जा रही है। ऐसी उम्मीद पालना की उद्योग प्रधान सभ्यता और संस्कृति में रच बस गये विकसीत राज्यों के नागरिक विकासशील राज्यों के उच्च और संभ्रात वर्ग के लोग अपने जीवनशैली में अमूल चूल परिर्वतन कर गाँधी जी द्वारा दिखाये गये तथा उनके द्वारा जिये जीवन मूल्य को अपनाकर इस धरती को सर्वनाश से बचा लेगें। यह दिन में सपने देखने जैसी स्थिति है। उद्योग प्रधान सभ्यता पूँजीवाद की जड़ों को निरन्तर सशक्त करती जा रही है। स्वतंत्रता के महत्व को उद्योग प्रधान सभ्यता ने रेखांकित कर साम्यवाद की आर्थिक समानता की नीति को तब तक चुनौती देती रही, जब तक सोवियतसंघ का अंत नहीं हो गया। वैसे भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा साम्यवादी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य औद्योगिकरण को बढ़ावा देने वाला ही रहा है। इसलिए, यह मान लेना कि 1917 की रूस में साम्यवादी क्रांति पूँजीवादी के समूल विनाश के नारे के साथ अवतरित हुई, वह न्यूनतम संसाधन से श्रम प्रधान आर्थिक नीति का अनुशरण कर औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न भारी मशीन के सहयोग से उत्पादन की व्यवस्था को तिलांजली देकर धरती के संसाधन के अत्याधिक उपयोग से परहेज करते हुए ऐसी नीति का अनुकरण करेगी जो मनुष्य में सदा जीवन उच्च विचार जैसी जीवनशैली को अपनाने हेतु प्रेरित करे।

मार्क्सवाद तथा उदारवाद जीवन के उपभोगी या भौतिक स्तर में लगातार वृद्धि के पक्षधर है और इसे प्राप्त करने के लिए वे प्राकृतिक संसाधनों, खनिजों तथा जीवाश्म ईधनों के अत्याधिक दोहन पर निर्भर करते है।

धरती को बचाने का एक मात्र सूत्र अति भौतिक वाद तथा अति उपभोक्तावाद से परहेज कर न्यूनतम संसाधन से जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की कला अपनाना है। इस दृष्टि से उद्योग प्रधान सभ्यता से उत्पन्न अति भोगवाद तथा लालच से मुँह मोड़कर गाँधी जी द्वारा सुझाये सभ्यता के उन मूल्यों को अपनाना जो पूर्वी और परिचमी सभ्यता के आदर्श मूल्य है। इस मार्ग पर चलकर ही धरती पर जीने योग्य परिस्थति का संरक्षण हो सकता है। राज्य नेताओं, नीति निर्माताओं तथा बुद्धिजीवियों की सोच यह है कि विकास और समृद्धि हेतु उसी मार्ग पर चलने की जरूरत है जिस नीति को अपनाकर विकसित राज्य संपन्न बने हैं। गाँधी जी का दृष्टिकोण था कि उसके प्राकृतिक गण जो उसे मानव के रूप में प्रतिष्ठित किया था धीरे–धीरे समाप्त होते जा रहे है। हृदय से सोचने तदअनुरूप आचरण करने के स्थान पर वह दिमाग से सोचने को तरजीह देने लगा है, और अपने भौतिक सुख के

लिये धरती को संपूर्ण रूप से संसाधनहीन बना देना चाहता है। गाँधी जी ने कहा ''धरती के पास मानवीय आवश्यकताये पूरी करने के लिए पर्याप्त है परन्तु साथ ही साथ एक भी व्यक्ति के प्रलोभन को पूरा करने के लिए कतई कुछ नहीं।''

गाँधी जी ने पश्चिम के सोच पर प्रहार करते हुए लिखा विकास के पाश्चात्य उपगम्य ने दिमाग को हाथों से उपर आदमी को कुदरत से उपर और प्रौद्योगिकी को तजुर्बे से उपर रखा है। यही हमारे नैतिक ह्यास और असतत् हाब्स तथा बेनथम के बिचारों से प्रभावित थे। हाबस मनुष्य को असमाजिक तथा निस्वार्थी प्राणी मानता था। बेनथम का सूत्र अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख की नीति थी। स्वार्थी व्यक्ति तथा अधिकतम सुख के प्रति प्रतिबध आदमी से यह अपेक्षा नही की जा सकती की वह परहितवादी में यकीन रखते हुऐ स्वयं के स्वार्थ और सुख पर संयम का अंकुश रखेगें। संयमित जीवन जीना गाँधी वादी युग की ही नहीं हर युग की माँग रही है। उद्योग प्रधान सभ्यता के भौतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबध लोग भारत के इस मूल मंत्र को नहीं समझ सकते कि दूसरों के सुख में ही स्वयं का सुख है। चाहे यह मंत्र गाँधी जी के द्वारा दोहराया जाय या पश्चिम के बौधिक विचारक रस्कि अथवा चोरो के हों पश्चिम के लोग ही नहीं भारत के लोग भी उधोग प्रधान सभ्यता के चकाचौंध में फॅसकर गाँधी जी को सेमिनार और विचारगोष्ठी के विचार विमर्श तक सीमित कर देने पर आमदा है। यह बात समझी जा सकती है समृद्धि और वैभव प्रगति के प्रतीक है। आधुनिक जीवन शैली जो प्रौद्योगिकी पर उत्तरोतर निर्भर होती जा रही है उस जीवन को भोगने वाले लोगों से यह उम्मीद पालना की वे उद्योग प्रधान सभ्यता के आर्थिक दर्शन के अनुरूप जीवन जीने के आदत को बदलकर गाँधीवादी दर्शन के अनुरूप जीवन शैली अपना लेंगें, लगभग नामुमकिन है। उद्योग प्रधान सभ्यता ने जिस ऐश्वर्य तथा समृद्धि के स्तर को छू लिया है, उतरोत्तर परिष्कृत तकनीक तथा आधुनिकतम मशीन के सहारे, आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व जिन वस्तुओं की परिकल्पना तक नहीं की जा सकती थी, ऐसी यंत्र और वस्तुओं का उत्पादन विज्ञान की सहायता से संभव बना दिया है। वह समाज मशीनों से मुक्त व्यक्तिगत श्रम से अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने हेतू पर्यावरण संरक्षण के नाम पर स्वयं को बदल लेगा नामुमकिन है।

गाँधी जी विज्ञान के इस चमत्कार से भली–भॉति परिचीत थे कि भौतिक समृद्धि और ऐश्वर्य को प्राप्त करने में मनुष्य को किस उँचाई पर पहुँचा सकता है। गाँधी जी ने कहा लेकिन विज्ञान का एक दूसरा रूप भी है जो अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग मानव जाति की भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए करना चाहता है। गाँधी जी ने विज्ञान की इसी बढ़ती प्रवृति पर रोक लगाने का सुझाव दिया। मशीन का विरोध भौतिक जीवन को समृद्ध बनाने में विज्ञान का महत्व उद्योग प्रधान सभ्यता के इसी मूल्य से गाँधी जी का अर्न्तविरोध था। प्रश्न यह है कि संपूर्ण मानवता के लिए उद्योग प्रधान सभ्यता ने जिन उपलब्धियों को हासिल किया है। इस दृष्टि से उसकी उपलब्धियॉ शानदार है। जो सुख–सुविधा एक सामान्य मनुष्य को आज उपलब्ध है अतीत में धरती पर बड़े से बड़े सम्राट को इस प्रकार की सुविधा उपलब्ध नहीं है। एक मोबाईल फोन के अविष्कार ने मनुष्य को वो ज्ञान की चाभी प्रदान कर दी है, वही एक बटन दबाते ही इंटरनेट की सहायता से वो सारी जानकारी प्राप्त कर सकता है जो जानकारी बड़े–बड़े परिष्कृत पुस्तकालयों के दराज में पुस्तक के रूप में उपलब्ध थी। गाँव का कम पढ़ा–लिखा व्यक्ति जो आधुनिक चिकित्सा कराने हेतू शहर नही जा सकता था, टेलि–मेडिसिन के माध्यम से इंटरनेट अथवा मोबाईल के जरिये सुदूर बैठे किसी आधुनिक चिकित्सक से राय लेकर अपना ईलाज करा सकता है।

भीषण प्राकृतिक आपदा की स्थिति में वायुयानों के सहारे पीड़ित व्यक्तियों तक दुनिया भर से शीघ्र डाक्टरी सहायता चिकित्सा से सम्बन्धित आधुनिक उपकरण पीड़ितों तक आवश्यक सामग्री जैसे भोजन, पीने का लिए साफ जल, महामारी से बचाव हेतू टीका इत्यादि आपदा वाले क्षेत्र में विशेषज्ञ चिकित्सकों सहायता कर्मियों को शीघ्र पहुँचाया जा सकता है। इस सभ्यता की प्रशंसा में जितना लिखा जाय वह कम है। चाँद पर मानव का पहला कदम मंगल ग्रह पर मानव रहित स्वचालित रोबोट को उतारना अंतरिक्ष में जीवन की खोज पृथ्वी पर असाध्य रोगों के ईलाज हेतु अंतरिक्ष में स्थापित प्रयोगशाला में प्रयोग, यहाँ तक कि चाँद और मंगल पर मानव बस्ती बसाने की योजना भविष्य में घटने वाली सुनहरी तस्वीर प्रस्तुत करती है।

सैनिकों के लिए आधुनिकतम अस्त्र–शस्त्र सुदूर तक मार्ग करने वाले परमाणु बम से लैस अन्तरमहाद्वीपिय

मिसाईल, मानव रहित बमवर्षक विमान (ड्रोन) जैसे अनगिनत अविष्कार इसी उद्योग प्रधान सभ्यता की उपलब्धि है। मौसम की भविष्यवाणी से समय रहते आने वाले प्राकृतिक आपदाओं भूकंप को छोड़कर की चेतावनी ने भारत समेत दुनिया के लाखों लोगों की जीवन की रक्षा करने में सहायता की है। यहाँ तक कि अमेरीकी वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में कृत्रिम जीवन की रचना की है। कोविड–19 से निबटने हेतु दुनिया के वैज्ञानिक एवं चिकित्सक इस महामारी को रोकने हेतु टीका का निर्माण करने में सफल हो गये हैं। कुछ क्षेत्रों को छोड़कर उपर वर्णित उपलब्धियों में भारत दुनिया के अग्रिम पंक्ति वाले राज्यों में शामिल है। लगभग प्रकृति पर विजय प्राप्त कर लेने में यह सभ्यता सफल हुई जान पड़ती है। इस दृष्टि से 1909 में लिखी गयी हिन्द स्वराज नामक पुस्तक में गाँधी जी ने जिस सभ्यता की तस्वीर प्रस्तुत की यह अपेक्षाकृत न्यूनतम संसाधन से न्यूनतम मशीन के प्रयोग के द्वारा कम उर्जा की खपत से, स्वयं श्रम कर, बुनियादी जरूरतों को पूरा करने हेतु, जिस विकेन्द्रीकृत ग्राम प्रधान आत्मनिर्भर सभ्यता की वकालत की है वह उद्योग प्रधान सभ्यता की उपलब्धियों की तुलना में गांधीवादी सभ्यता और संस्कृति विकल्प नहीं बन सकता है। वैसे महात्मा गाँधी ने मशीनों पर आधारित सभ्यता से सच्ची सभ्यता की तुलना की है। सच्ची सभ्यता धर्म और नैतिकता पर आधारित होगी, जबकि मशीनी सभ्यता अर्थ, धन, काम और इच्छा पर आधारित है। पश्चिमी सभ्यता से दुनिया को विशेषकर समस्त प्रकृति को जितनी क्षति हुई है उसका ठीक–ठीक आंकलन किया जाय तो इतना कहना ही पर्याप्त होगा अति उपभोगवाद की प्रवृति ने प्राकृतिक संसाधन समेत पर्यावरण को इतनी क्षति पहुँचाई है कि धरती की स्वास्थ की चिंता करने वाले वैज्ञानिक तथा पर्यावरण प्रेमी लोग यह अनुमान लगाने लगे है कि मनुष्य के अस्तित्व का कोई दीर्घकालीन भविष्य है। कुछ ही वर्षो में भू–जल का गंभीर संकट भारत जैसे धनी आबादी वाली देश में करोड़ों लोगो के जीवन को शुद्ध जल के अभाव में गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

हिमालय के वे ग्लेशियर जो अनेक नदियों का उद्गम श्रोत है विशेषकर गंगा नदी के ग्लेशियर को इस पर नजर रखने वाले कुछ भारतीय वैज्ञानिकों ने यह अनुमान लगाया है कि तीस पैंतीस वर्ष में यह हिम नद इतना सिकुड़ जायेगा की गंगा नदी सुख जायगी। यह स्थिति गंगा नदी के किनारे बसी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति जिससे भारत की पहचान जुड़ी है उसका अंत हो जायगा। भारत की धरती पर जीवनदायिनी पवित्र गंगा का अस्तित्व ही नहीं रहेगा, तो वे करोड़ो लोग जिनका जीवन गंगा जल पर निर्भर है उनके समक्ष कैसा संकट होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से उद्योग प्रधान सभ्यता तथा हिंद स्वराज में वर्णित गाँधी जी के जीवन दर्शन पर आधारित सभ्यता की तुलना जीवन मुल्य की रक्षा धरती के स्वस्थ विशेषकर पर्यावरण के संरक्षण कुल मिलाकर मनुष्य के अस्तित्व रक्षा के आधार पर की जा सकती है। क्या समस्त मानव के लिए उघोग प्रधान सभ्यता, भौतिक समृद्धि का स्तर विकसित राज्यों में रहने वाले नागरिकों के उपभोग स्तर तक उपलब्ध कराने में सक्षम है, विशेषकर तब जब पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन तेजी से कम होते जा रहे है। उघोग प्रधान सभ्यता के हिमायती यह तर्क प्रस्तुत करते है कि व्यक्ति के पहल से ही समृद्धि और ऐश्वर्य पैदा की जा सकती है। जिन व्यक्तियों में सम्पति सृजित करने की क्षमता है वे लोग ही उघोग प्रधान सभ्यता के दर्शन से लाभ उठाकर स्वयं अपने परिवार समाज राज्य एवं राष्ट्र को समृद्धि के शिखर पर पहुँचा सकते है। उद्योग प्रधान सभ्यता का यह दर्शन स्वयं व्यक्ति को अमीर अथवा गरीब होने के लिए उतरादयी ठहराता है। वह पृथ्वी के संसाधन जिस पर समस्त मानव जाति का अधिकार है उसे उन लोगो को सुपुर्द कर देता है जिनके पास संसाधन के उपयोग करने हेतु निवेश करने के लिए धन है, परिष्कृत आधुनिकतम तकनीक एवं मशीने है।

स्वाभाविक है वे लोग जो विकास के क्रम में ऐतिहासिक कारण से पिछड़ गये, समय और परिस्थिति के अनुरूप अपने राज्य की अर्थव्यवस्था को आधुनिक नहीं बना सके, उनकी गैर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था पश्चिम में औद्योगिक क्रांति से पैदा हुई उद्योग प्रधान सभ्यता से मुकाबला नहीं कर सकी। अपने राज्य के अविकसित प्राकृतिक संसाधन एवं बाजार विकसित राज्यों के साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की नीति के कारण उन्हें सौंपने हेतु विवश हुऐ। अब हालत ऐसे है कि यह राज्य स्वतंत्र है, इनके पास अब भी प्राकृतिक संसाधन की प्रचुरता है। उनके पास निवेश करने के लिए धन परिष्कृत तकनीक, प्रशिक्षित मानव संसाधन, कुशल प्रबन्धकों एवं विशेषज्ञों का अभाव है। इन राज्यों के नीति निर्माता विकसित राज्यों से पूँजी का आयात कर उनके शर्तों पर उन्ही के तकनीक से अपने राज्य को विकसित

करना चाहते है। वे जानते है कि जिस नीति का वे अनुशरण कर रहे है उससे पीढ़ियों से अभाव का जीवन जी रही लाइलाज गरीबी का दंश झेल रही, शोषित और पीड़ित जनता को गुणवतापूर्ण जीवन उपलबध नही कराया जा सकता। नवउदारवादी बाजार पर आधारित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से लाभ वही लोग उठा सकते है जो लोग बाजार को लाभ प्रदान करने में सक्षम है। शेष लोग जिनकी क्रय शक्ति कमजोर है वे बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के परिधि से बाहर है। ऐसे ही लोगो को प्रसिद्ध लेखिका अरुंधती राय ने बहिष्कृत समाज के नाम से संबोधित किया है। धरती के स्वास्थ्य का सवाल हो, निधनता दूर करने की जरूरत इन दो बुनियादी मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित कर उद्योग प्रधान अर्थव्यवस्था का विकल्प तलाशा जाय, तो वह विकल्प हिन्द स्वराज में वर्णित गाँधीवादी अर्थव्यवस्था की रूप रेखा हो सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि इस अर्थव्यवस्था को अपनाकर अभाव में जी रहे विकासशील राज्यों के करोड़ों लोगो को गरीबी दूर की जा सकती है।

इसके लिए व्यक्ति के भीतर जो प्रतिभा छिपी है अथवा उनके परिवार का पेशा है उस प्रतिभा को निखारने और परिवार के पेशा को अपनाने हेतु व्यक्ति को प्रशिक्षित और प्रेरित किया जाना चाहिए। व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के पीछे यह उद्देश्य है कि उसकी प्रतिभा और परिवार के पेशों के बीच कोई अंतर है तो व्यक्ति की प्रतिभा को ही प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है । शर्त यह होनी चाहिए की वह व्यक्ति व्यक्तिगत श्रम से ही उत्पादन करे। महात्मा गाँधी के अनुसार व्यक्तिगत श्रम ही परम मूल्य है। वकील, भंगी और नाई के श्रम के बीच कोई अंतर नहीं है इसलिए वर्ण व्यवस्था पर आधारित श्रम विभाजन का जो सिद्धांत समाज की संरचना के गठन का आधार था, उसे पुनः कर्म प्रधान बनाकर वर्ण व्यवस्था की जन्म प्रधान विकृत को दूर कर सभी लोगो को व्यक्तिगत श्रम से जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा सदा जीवन उच्च विचार को आचरण में अपनाने की आवश्यकता है।

यह अर्थव्यवस्था बहुसंख्यक उपेक्षित एवं वंचित वर्ग के हित का जितना ख्याल रखती है, उतना ही महत्व पृथ्वी के संसाधन के संरक्षण पर देती है। गांधी द्वारा संस्थापित सामुदायिक जीवन, श्रमिक जीवन, वृक्षारोपण, कृषि, साधारण जीवन और शिल्प का समायोग था। वर्तमान समाज नवउदारवादी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जो उद्योग प्रधान सभ्यता का विस्तार है तथा व्यक्ति की भौतिक संतुष्टि को समुदाय के संतुष्टि के उपर प्राथमिकता देता है के दर्शन को ऐसे ही बरकरार रखना चाहे तो धरती से गरीबी जैसी लाईलाज बीमारी का ईलाज संभव नहीं है।

लक्ष्य में भी इंकार नहीं किया जा सकता कि अति आत्म केन्द्रीत तथा भौतिक वादी जीवन का आनंद लेने वाली धनाड्य वर्ग गाँधीवादी जीवन दर्शन को क्यों अपनायेंगें। क्यों स्वयं के प्रयत्न से अर्जित संपति का त्याग कर सादा जीवन उच्च विचार के दर्शन के अनुरूप जीवन जीने हेतु राजी होगें। इसका अभिप्राय यह है धरती की कुल आबादी का 70 से 80 प्रतिशत हिस्सा अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पृथ्वी के संसाधन का अपने हित में उपयोग करने का आकांक्षी है। शेष 20 प्रतिशत आबादी जो ऐतिहासिक कारणों से उद्योग प्रधान सभ्यता की आर्थिक नीति से लाभ उठाकर विकास के दौड़ में बहुत आगे बढ़ गये है तथा भौतिक जीवन जीने के इतने आदी हो गये है कि पृथ्वी के संसाधन एवं धन पर अपना कठोर नियंत्रण को अपने जीवन शैली को बरकरार रखने के लिए आवश्यक मानते है। यह संघर्ष 80 प्रतिशत लोगो का 20 प्रतिशत अति संपन्न लोगो के साथ हैं। दोनो वर्ग पृथ्वी के संसाधन को अपने हित के अनुरूप उपयोग करना चाहते है। 80 प्रतिशत लोगो का प्रयत्न अभाव ग्रस्त जीवन से उबरकर बेहतर जीवन को प्राप्त करना है। शेष 20 प्रतिशत संपन्न लोग अधीकतम सुख की चाह में और अधिक संपन्न होना चाहते है। प्रश्न यह है कि बेहतर जीवन प्राप्त करने की सीमा क्या है। अधिकतम सुख की सीमा क्या है। यहाँ गाँधी जी के वे नैतिक प्रश्न जिसको आधार बनाकर उद्योग प्रधान सभ्यता की आलोचना की गई थी, संपूर्ण मानव जाति के हित में प्रकृति से तादात्म स्थापित कर जीवन जीने की सलाह दी गयी थी। दोनो वर्गो के हितों में जो अर्न्तविरोध है उसका हल यही है। दोनो ही वर्ग को अपने –अपने लक्ष्य को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है।

70 से 80 प्रतिशत लोग की चाहत बेहतर जीवन की सीमा लाँघकर, ''सादा जीवन उच्च विचार'' के अनुरूप

मार्यादित जीवन की सीमा भंग कर निराभौतिकवादी बनने की आकांक्षा रखना है तो निकट भविष्य में ही यह पृथ्वी जीवन जीने की दशाओं के अनुकुल नहीं रह जायगी। एक अनुमान के अनुसार यदि भारत और चीन के लोग विकसित राज्यों के नागरिकों के स्तर तक संपन्नता को प्राप्त करना चाहते है तो इस पृथ्वी के पास इतने संसाधन नहीं कि इन लोगों की भौतिक जरूरतों को पूरा कर सके।

विकसित राज्यों के नागरिकों के उपभोग स्तर तक भारत और चीन के नागकि पहुँचने की आकांक्षा रखते है तो दो अतिरिक्त पृथ्वी के संसाधन की आवश्यकता होगी। प्रश्न पृथ्वी पर मनुष्य समेत समस्त प्राणियों के अस्तित्व रक्षा का है। किसी खास तरह की जीवन शैली को बरकरार रखने का नहीं उद्योग प्रधान सभ्यता ने व्यक्ति की संतुष्टी को प्राथमिकता प्रदान कर उसे निराभौतिकवादी बना दिया। मशीनों, यंत्रों, नूतन परिष्कृत तकनीकों पर अत्याधिक निर्भर रहने का अभ्यस्त बनाकर उसे व्यक्तिगत श्रम करने से लगभग मुक्त कर दिया है। स्वभाविक है कि वह सुविधाभोगी मनुष्य बन कर रह गया है। उसके लिए अपनी जीवन शैली को बरकरार रखने के अतिरिक्त अन्य किसी बात का महत्व नहीं है, दूसरी ओर आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है जो अपनी गरीबी और अभाव के लिए व्यक्तिगत श्रम से सीमित संसाधन पैदा करने को उत्तरदायी ठहरता है, वह अपने सुख –सुविधा के लिए पृथ्वी के संसाधनों का इस्तेमाल कर संपन्नता का स्तर प्राप्त करना चाहता है। स्वभाविक है कि पृथ्वी के संसाधन पर दबाव है। प्राकृतिक संसाधन का विकल्प तलाशने हेतु, अनगिनत अनुसंधान संसाधन विहिन होती जा रही है, धरती पर कृत्रिम संसाधन से जीवन जीने हेतू आवश्यक दशा पैदा करने का विकल्प खोजा जा रहा है। इस उदेश्य से कि प्राकृतिक ऊर्जा के भंडार गुणवतापूर्ण जीवन जीने हेतु प्राकृतिक संसाधनों के बगैर भी अक्षयऊर्जा की खोजकर जैसे सौर उर्जा हाइड्रोजन गैस प्रयोग शाला में कृत्रिम खाद्यसामग्री इत्यादि पैदा कर मनुष्य की पृथ्वी के प्राकृतिक सांसाधन पर निर्भरता को सीमित कर विज्ञान और नवीन तकनीक की सहायता से बेहतर जीवन जिया जा सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है मनुष्य ने अपने ज्ञान के सहारे प्रकृति पर विजय प्राप्त करना ठान रखी है, इसलिए उद्योग प्रधान सभ्यता भौतिक समृद्धि और ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतू मशीन आधारित उत्पादन करने का पूंजीवाद का जो मार्ग गैरपूंजीवादी मानव श्रम से जीने वाले समाज के समक्ष जो विकल्प प्रस्तुत किया था, विकास और प्रगति हासिल करने का वही श्रेष्ठ मार्ग है।

जिस तेजी से मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं विशेष रूप से समाज के शीर्ष वर्ग की आवश्यकताऐ बढ़ती जा रही है तथा समान के निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के बीच उपभोग के स्तर पर क्रय शक्ति के स्तर पर भौतिक और सामाजिक संसाधन तक पहुँच के स्तर पर असमानता की खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है, इस स्थिति को कैसे काबू में लाया जाय। यह विचारणीय प्रश्न है। जिस असमानता को उद्योग प्रधान सभ्यता ने पैदा किया उस असमानता को सीमित करने का विकल्प हिन्द स्वराज में वर्णित गाँधी वादी समाज की रूप रेखा हो सकती है।

fu"d"k

क्या उस विकल्प से दोनो सभ्यताओं के मूल्यों जैसे भौतिक ऐश्वर्य और समृद्धि संयम के साथ जीने सीमित साधन के साथ बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के बीच कोई सहमति की गुंजाईश है। विशेषकर धरती के स्वास्थ, धरती के द्वारा संसाधन पैदा करने की क्षमता संसाधन के माँग और आपूर्ति के बीच निरन्तर बढ़ता अंतर, गरीबी से उबरने कुल मिलाकर पृथ्वी को जीवन जीने के अनुकुल बनाये रखने तथा सामाजिक स्तर पर मानवीय मूल्यों के संरक्षण को आधार बनाकर कोई सहमति प्राप्त की जा सकती है। यह सहमति तभी हो सकती है जब उद्योग प्रधान सभ्यता के हिमायती यह स्वीकार करें कि अति उपभोक्ता वाद की प्रवृति ने प्राकृतिक संसाधनों का एक वर्ग विशेष की समृद्धि हेतु जो औद्योगिक क्रांति से उपजे आर्थिक समृद्धि को व्यक्ति के जोखिम लेने के पहले का परिणाम मानता है, सारा ऐश्वर्य और समृद्धि का हकदार वह व्यक्ति और समाज है। इसलिए पृथ्वी के संसाधन पर उस वर्ग का ही एकाधिकार है जो सही नहीं है, तभी समाजिक डार्विनवाद अर्थात् योग्यतम ही जीवित रहेगा कि मूल्य से मुक्त होकर उद्योग प्रधान सभ्यता की विकृति को दूर किया जा सकता है।

दरअसल पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व रक्षा का सवाल का एक मात्र हल प्राकृतिक संसाधन का सीमित उपयोग ही है। उद्योग प्रधान सभ्यता द्वारा मशीनों से अधिक उत्पादन करना अतिरिक्त उत्पादन से अतिरिक्त लाभ प्राप्त करने हेतू प्राकृतिक संसाधन से संपन्न गैरपूंजीवादी राज्यों में अपने उत्पाद को बेचने के लिए उसके बाजार पर अपना नियंत्रण कायम करना, अतिरिक्त लाभ अर्जित कर अपने देश के नागरिकों को एश्वर्य और समृद्धि से लाभन्वित करने हेतु उन्हें ऐशो आराम की जिंदगी जीने हेतु उनके क्रय शक्ति को सुदृढ़ बनाना यही वे नीतियॉ है, जिसने पृथ्वी के संसाधन का अत्याधिक उपयोग कर पृथ्वी के वातावरण को प्रदूषित कर दिया गया। पृथ्वी पर विचरण करने वाले पशुपक्षियों समेत सभी जीवों एवं प्राणियों जिसमें मानव भी शामिल है, के समक्ष अस्तित्व रक्षा का प्रश्न खड़ा कर दिया। इन मानवों में वे मानव भी शामिल है जो ऐशो आराम की जिन्दगी व्यतीत करने के लिए अपने आय के स्त्रोत से अधिक खर्च करने हेतु कर्ज लेते है अर्थात् वे ऋण लेकर भी चारवाक दर्शन पर अमल करने वाले लोग है। वे ये नहीं समझ पा रहे कि उनकी उपभोगवादी प्रवृति ने ही प्राकृतिक संसाधन के अत्याधिक खपत से पृथ्वी पर मनुष्य समेत अन्य प्राणियों के समक्ष अस्तित्व रक्षा का प्रश्न खडा कर दिया है। अस्तित्व रक्षा का सवाल सिर्फ संसाधनहीन जन सामान्य लोगों के समक्ष नहीं है, उस संपन्न वर्ग के समक्ष भी है, जो निराभौतिक वादी बनकर स्वयं के जीवन लीला समाप्त करने हेतु जाने–अनजाने परिस्थति पैदा कर दी है। दरअसल इसी वर्ग पर पृथ्वी को विनाश से बचाने का सबसे बड़ा उतरदायित्व है।

कम संसाधन से जीवन जीने की कला इसी वर्ग को सीखने की आवष्यकता है। यह तभी संभव है जब यह वर्ग जीवन जीने के वर्तमान शैली को पूर्ण रूप से बदल दें। जरूरत से अधिक प्राकृतिक संसाधन का उपयोग छोड़ दें। गाँधी जी द्वारा सुझाए अपरिग्रह के सिधान्त के अनुरूप जीवन जीने का प्रयत्न करें। समय रहते यह संपन्न वर्ग कम संसाधन से जीने की कला सीख लें, तो पर्यावरण संकट का हल सरलता से ढूँढ़ा जा सकता है।

हिन्द स्वराज में वर्णित गाँधी जी के सभ्यता सामाजिक आर्थिक दर्शन कम संसाधन से जीवन जीने वाले वर्ग उपभोक्तावाद भौतिकतावाद के दर्शन का त्याग करने वाले संपन्न वर्ग के बीच की दूरी कम की जा सकती है। उद्योग प्रधान सभ्यता ने आधुनिकता और भौतिकवाद का जो मानदंड निर्धारित किया वह गाँधीवादी के सामाजिक , आर्थिक दर्शन के बिल्कुल प्रतिकुल है इसलिए उद्योग प्रधान सभ्यता और संस्कृति से पैदा हुआ समाज औद्योगिक क्रांति से पूर्व की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था के अनुरूप जीवन शैली को अपनाने तथा व्यक्तिगत श्रम से उत्पादन के तौर–तरीके को अपनाकर घड़ी की सूई को पीछे छोड़कर नये सिरे से परम्परागत मूल्यों के अनुरूप जीवन जीने की कला सीख सकेगा यह लगभग असम्भव है।

अरस्तू ने मानव श्रम से मनुष्य की मुक्ति का अंत हेतु मशीनों द्वारा मानव श्रम की प्रस्थापना की भविष्यवाणी की थी, उस भविष्यवाणी को औद्योगिक क्रांति (18 वीं शताब्दी) ने संभव बनाया। स्वभाविक है, उद्योग प्रधान सभ्यता के प्रति विशेष रूप से भारी मशीनों द्वारा उत्पादन करने रेलवे जैसी परिवहन के साधन को संबंध में, महात्मा गाँधी का जो दृष्टिकोण रहा है, उसमें संशोधन की आवश्यकता है। आज का समाज कठिन कार्य को संपन्न करने हेतू मात्र मानव श्रम के उपयोग को उसी प्रकार अनैतिक मानता है जिस प्रकार गाँधी जी ने मशीनों द्वारा उत्पादन भौतिक सुख–सुविधा हेतु विज्ञान के उपयोग को अनैतिक बताया है। असाध्य रोग की चिकित्सा हेतु चिकित्सक कितने महत्वपूर्ण हैं, 1918 में स्पेनिस फ्लू से दस करोड़ लोग मर गये थे। बीमारी के रोकथाम में चिकित्सकों की भूमिका क्या थी उसका अनुभव महात्मा गाँधी ने किया था। जाहिर है कि हिन्द स्वराज में चिकित्कों के संबंध में पूर्व में उन्होनें जो विचार किया था, वह यह राय बदल गयी होगी। उनकी राय बदले या न बदले हर युग में आम व्यक्ति की राय में चिकित्सक धरती पर भगवान का दर्जा रखता है इसलिए उसकी सेवा को आधुनिक समाज एवं भारत को भी उतनी ही जरूरत है। गाँधी जी ने श्रम को परम मूल्य माना, नाई, भंगी और वकील के श्रम में कोई अंतर नहीं है। इस दृिष्टकोण को भी आधुनिक समाज इसलिए स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि श्रम विभाजन का सिद्धान्त समाज की प्रगति और मनुष्य के वर्तमान हालात में सुधार हेतु सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अर्थात समाज में विशेषीकरण एवं विभिन्नीकरण को बढ़ावा देने वाला सिद्धान्त है। इस दृष्टिकोण से जटील होते सामाजिक निरन्तर बढ़ती जा रही है। सार रूप में उद्योग प्रधान सभ्यता की अतिभौतिकवाद, मशीनों, तकनीकों, प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयोग से

परहेज कर तथा गाँधीवादी अर्थव्यवस्था के विशुद्ध रूप से मानव श्रम से उत्पादन के सिद्धान्त में कुछ संशोधन कर मशीनों को मानव श्रम से उत्पादन करने में सहायक की भूमिका प्रदान करने रेलवे जैसे यातायात के साधन की आलोचना से बचने के आधार पर गाँधीवादी सभ्यता की रूपरेखा तथा उद्योग प्रधान सभ्यता के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इससे मानव जाति के हित में सामान्य रूप से विशेष रूप से धरती पर जीवन जीने योग्य क्षीण होती परिस्थितियों को सुद्ढ़ करने में दोनों ही सभ्यताओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।

I nHk I ph

1. नेहरू जवाहर लाल, *विश्व इतिहास की झलक,* प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल N-77, पहली मंजिल कनॉट सर्कस, नई दिल्ली.110001– संस्करण 2013–पृ0सं0 11 पृ0 220
2. नेहरू जवाहर लाल, *विश्व इतिहास की झलक,* प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल N-77, पहली मंजिल कनॉट सर्कस, नई दिल्ली.110001– संस्करण 2013–पृ0सं0 11 पृ0 220
3. गांधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएं लेखक– राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन–21, दरियागंज, नयी दिल्ली–प्रथम संस्करण –2000 पृ0–501
4. पूर्वोक्त– नेहरू जवाहर लाल, पृ0–217
5. मिश्र अर्जुन, *उपनिवेशवाद, सम्राज्यवाद एवं भारतीय पुनर्जागरण,* ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली–पृ0–5
6. नेहरू जवाहर लाल,
7. सिंहा मनोज, *गांधी अध्ययन,* ओरियंत पृ0सं040 ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली पुनर्मुद्रित 2011
8. सिंहा मनोज, *गांधी अध्ययन,* ओरियंत पृ0सं046 ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली पुनर्मुद्रित 2011
9. नेहरू जवाहर लाल, पृ0सं0 220
10. नेहरू जवाहर लाल, पृ0सं0 252
11. टंडन आलोक, *नेहरू और अम्बेदकर भारतीय आधुनिकता के दो चेहरे,* प्रतिमान सम्पादक अभय कुमार दुबे जून–2016
12. मिश्र अर्जुन, पृ0सं0 5,6
13. सिंहा मनोज, पृ0सं0 38
14. सिंहा मनोज, पृ0सं0 38
15. सिंहा मनोज, पृ0सं0 41
16. सिंहा मनोज, पृ0सं0 42
17. सिंहा मनोज, पृ0सं0 55
18. सिंहा मनोज, पृ0सं0 153
19. कोठारी रजनी, *भारत में राजनीति,* दूसरा संस्करण– एक परिचय ओरियंट ब्लेक स्वान प्राइवेट लिमिटेड मुख्य कार्यालय।

****